Name - Aarti
Roll No. - SKT/19/22

टिप्पणी लिखिए।

1. **नाद** :- नाद ध्वनि को कहा जाता है। संस्कृत मे स्वर को नाद कहते है। संस्कृत मे कहा गया है।

गीतं नादात्मकं वाद्यं नाद व्यक्त्य प्रशस्यमे:।

अर्थात - गीत नादात्मक है व वाद्य नाद को अभिव्यक्त करता है।

नाद के दो प्रकार है :-

1. आहत
2. अनाहत

आहातो न आधातोश्च इति द्विधानादो निगद्यते।
सोंचं प्रकाशते पिंडे तस्मात पिंडो अभिधीयते।।

अर्थात :- नाद आहत तथा अनाहत भेद से दो प्रकार का है और शोर के विपरीत संगित की ध्वनियाँ नाद कहलाती है। आहत और अनाहत शरीर से स्पष्ट होते है। आहत वाद्य द्वारा शरीर से स्पष्ट होते है व अनाहत योगिगम्य है। यह योगियो द्वारा शरीर के अंदर सुना जाता है।

नाद के बिना संगीत की कल्पना नहीं की जा सकती। एक संगीतकार नाद की सहायता से ही संगीत बनाती है।

नादोऽति सूक्ष्म: सुक्ष्मश्च पुष्टोऽपुष्टश्च कृत्रिम:।
इति पञ्चविधा धत्ते पञ्चस्थानस्थित: क्रमात।।

3) सप्त स्वर :-

श्रुतिभ्यः स्युः स्वराः षड्जर्षभगान्धारमध्यमाः ।
पञ्चमो धैवतश्चाथ निषाद इति सप्त ते ॥
तेषां संज्ञा सरिगमपधनीत्यपरा मताः ॥

श्रुतिभ्यः → श्रुतियों के द्वारा स्वराः स्युः स्वर होते हैं! षड्ज - ऋषभ - गान्धार - मध्यमाः पञ्चमः धैवतः च षड्ज, ऋषभ, गान्धार, मध्यम, पंचम, और धैवत अथ निषादः और निषाद इति ते सप्त ये वे सात (स्वर हैं) तेषां उनके सरिगमपधानि - इति स, रि, ग, म, प, ध, नि, - ये अपराः संज्ञाः अन्य संज्ञाएँ (नाम) मताः मानी गई है!

(सर०) 'श्रुतियों से स्वर होते हैं' - ग्रंथकार का यह कथन महत्वपूर्ण है और दूसरे शब्दों में मतंग के 'अभिव्यक्ति' के सिद्धान्त की स्वीकृति का सूचक है! श्रुतियों से स्वर कहने में यह अभिप्रेत है कि ४, ३, २ आदि संख्या के श्रुतियों के समूह से विभिन्न स्वर व्यक्त होते हैं!

सिंह० और कल्लि० दोनों ने श्रुति और स्वर के संबंध पर मतंग द्वारा दिए गए पाँचों पक्षों को उद्धृत करते हुए व्याख्या की है, यद्यपि सिंह० ने इनकी चर्चा अगले श्लोक की टीका में की है! मतंग के इन पक्षों का सार यहाँ प्रस्तुत है!

1. स्वर और श्रुति दोनों का ग्रहण एक ही इन्द्रिय श्रवण - द्वारा होने के कारण दोनों में कोई पृथक कार्य स्पर्श न होने से दोनों में जाति और व्यक्ति की तरह तादात्म्य है!

classmate
Date
Page

2.6 दर्पण में चेहरे की तरह श्रुतियों में स्वर विवर्तित होते हैं।

3.6 जैसे मिट्टी के पिण्ड, दण्ड आदि घट के कारण हैं उसी तरह श्रुतियाँ स्वर का कारण हैं।

4.6 जैसे दूध दही के रूप में परिणत होता है उसी तरह स्वर भी श्रुतियों का परिणाम हैं।

5.6 अँधेरे में रखे घट आदि को जैसे दीपक अभिव्यक्त कर देता है उसी तरह श्रुतियों के द्वारा स्वर अभिव्यक्त होते हैं।

मतंग ने इनमें से पहले तीन का खंडन करके अन्तिम दो - परिणाम और अभिव्यक्ति - संबंधों को स्वीकार करके श्रुतियों के द्वारा स्वरों की अभिव्यक्ति पक्ष को ही अन्तिम रूप में स्वीकार किया है।

यहाँ यह स्पष्ट करना जरूरी है कि 'श्रुतियों से स्वर' का क्रम वैचारिक अथवा सैद्धान्तिक दृष्टि से तो समीचीन है लेकिन अनुभूति का क्रम इसके विपरीत है क्योंकि श्रवण-प्रत्यक्ष स्वरों का ही होता है, श्रुतियों का नहीं। भरत ने प्रत्यक्ष से परोक्ष को, क्रिया से सिद्धान्त का क्रम अपनाया है इसलिए स्वर पहले कह कर उसके बाद श्रुति की चर्चा की है। लेकिन शार्ङ्गदेव और बाद के सभी शास्त्रकारों ने इसके विपरीत पहले सिद्धान्त निरूपण करके फिर उसे क्रिया के द्वारा सिद्ध करने का क्रम अपनाया है। इसीलिए शार्ङ्गदेव ने 'श्रुतियों से स्वर' कहे हैं।

classmate
Date
Page

3. मूर्छना :-

ग्राम: स्वरसमूह: स्यात् मूर्छनादे: समाश्रय: ।

मूर्छना-आदे: मूर्छना आदि का समाश्रय: स्वरसमूह:
समाश्रय: स्वरसमूह ग्राम: स्यात ग्राम होता है!

ग्राम शब्द लोक से लिया गया है। सिंह० और कल्लि० ने मतंग के आधार पर यह स्पष्ट किया है कि जैसे लोक में जहाँ जनसमूह रहते हैं उसे ग्राम कहा जाता है उसी तरह जिसमें स्वरसमूह रहते हैं उसे भी 'ग्राम' कहा जाता है। मूर्छना (आदि)' कहने से मूर्छना, उसका क्रम, तान, वर्ण, अलंकार, जाति आदि जिन रूपों में स्वरसमूह व्यक्त होता है इन सभी का ग्रहण किया जाना चाहिए। 'मूर्छनादे: समाश्रय:' 'ग्राम' का विशेष लक्षण है। सिंह० द्वारा उद्धृत श्रं० सं० टीका के अंश, के अनुसार वही स्वरसमूह ग्राम कहला सकता है जो व्यवस्थित यानी निश्चित श्रुतिक्रम से युक्त स्वरों का समूह हो अन्यथा, सिंह के अनुसार, कोई भी स्वरसमूह ग्राम कहा जाएगा। वैदिक और लोकव्यवहार में अ, इ, उ आदि अथवा उदात्तादि भी स्वरों के समूह हो सकते हैं इसलिए 'मूर्छनादे: समाश्रय:' विशेषण का प्रयोग न हो तो लक्षण की अतिव्याप्ति हो सकती है यानी वैदिक और लौकिक स्वरों के समूह में भी ग्रामलक्षण चला जाएगा और वे भी ग्राम कहलाएँगे। उनसे भेद स्थापित करके संगीत के 'ग्राम' की विशेषता को प्रतिपादन करने के लिए ही इस विशेषण का प्रयोग किया गया है। जो मूर्छनादि का आश्रय होगा उसे व्यवस्थित स्वरसमूह

नहीं विशेष श्रुतिव्यवस्था या श्रुतिक्रम होना भी अनिवार्य है।

तौ द्वौ धरातले तत्र स्यातांषड्जमध्यमौ आदिमौ॥
धरातले पृथ्वी पर तौ द्वौ वे (ग्राम) दो (हैं)। तत्र उनमें से षड्जग्रामः षड्जग्राम आदिमः स्यात आदिम (पहला) होता है।

क्रमात्स्वराणां सप्तानामारोहश्चावरोहणम्।
मूर्छना का लक्षण और उसके भेद

क्रमात् क्रम से सप्तानां स्वराणां सात स्वरों का आरोहः अवरोहणं च आरोह और अवरोह मूर्छनां इति उच्यते मूर्छना (है) इस प्रकार कहा जाता है।
ताः च और वे ग्रामद्वये दो ग्रामों में सप्त-सप्त॰ सात-सात (होती हैं)।
(अर॰) ग्राम के लक्षण में उसे मूर्छनादि का आश्रय कहा जा चुका है! इसीलिए सबसे पहले मूर्छना के ही प्रकार के शुरु किया है!
'मूर्छना' शब्द की व्युत्पत्ति मतंग के अनुसार 'मूर्छ' धातु से ही जिसके अर्थ हैं- मोह और समुच्छ्राय (व्याप्त होना, वृद्धि)। कल्लि॰ के 'मुर्छा' धातु से व्युत्पत्ति की है! इस प्रकार मुर्छना शब्द 'मूर्छ' या 'मुर्छा' धातु से निष्पन्न होता है! इन धातुओं में विकल्प से 'च' कार होने पर 'मुर्छना' और न होने पर मूर्छना बनता है!

कल्लि के अनुसार धातु का मोहार्थक मानने पर मूर्छना का अर्थ है, जिसके द्वारा श्रोता मोहित होते हैं और समुच्छ्राय अर्थ का ग्रहण करने पर अर्थ है 'जिसके द्वारा राग व्याप्त होते हैं। अवधित उभरते हैं।

ctassmate
Date
Page

द० है दत्तिलकार द्वारा मूर्च्छना लक्षण में प्रयुक्त 'जाति', 'सप्तताना' और 'आरोहावरोहणो' पर टीका करते हुए कल्लि० ने यह स्पष्ट किया है कि कूटतानों से मूर्च्छना को अलग करने के लिए 'क्रमात' को प्रयोग किया है (क्योंकि कूटतानों में व्युत्क्रम होता है, सीधा क्रम नहीं।) सप्तताना के द्वारा शुद्ध तानों का निरास किया है (क्योंकि शुद्धतानों में छः या पाँच स्वरों का प्रयोग होता है, सात नहीं), 'आरोहावरोहणो' के द्वारा शुद्ध तानों, आरोही - अवरोही वर्ण और उन पर आधारित अलंकारों का निषेध किया है। उसने यह भी कहा है कि मतंग, नान्दिकेश्वरादि ने तीन स्थानों की व्याप्ति की सिद्धी के लिए लक्ष्य के अनुरोध से द्वादशस्वर मूर्च्छना भी कही है लेकिन द्वैततामिक प्रयोग में (द्वैततामिक जाति - रागादि के स्थलों) वह प्रयोजन सिद्ध हो ही जाता है इसीलिए दत्तिलकार ने उन्हें अलग से कहने की जरूरत नहीं समझी है।

भरत के मूर्च्छना लक्षण में आरोह - अवरोह अभिमत नहीं है। मतंग ने आरोह - अवरोह क्रम कहा है। लेकिन मूर्च्छना और तान का भेद बताते समय मूर्च्छना के आरोह क्रम और तान में अवरोह क्रम कहा है।

पदपाठ के नियम :-

वेदों के संहितापाठ की सुरक्षा के लिए ऋषियों ने पदपाठ की पद्धति अपनायी है। पदपाठ में संहितापाठ के मन्त्रों के प्रत्येक पद की सन्धि - विच्छेद कर अलग - अलग पढ़ा जाता है। जैसे - अग्निम् । ईळे। पुरःऽहितम् । यज्ञस्य । देवम्। ऋत्विजम्।

सामान्य नियम - संहितापाठ में विद्यमान सन्धियों का विच्छेद करके अलग - अलग रखना चाहिए और प्रत्येक पद के बाद पूर्ण विराम (।) का चिह्न लगाना चाहिए। संहितापाठ के अनुस्वार को पदपाठ में 'म' के रूप में परिवर्तित कर दिया जाता है। जैसे:-

संहितापाठ - अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्।

पदपाठ - अग्निम्। ईळे। पुरःहितम्। यज्ञस्य। देवम्। ऋत्विजम्।

इति का प्रयोग

१ प्रगृह्यसंज्ञक ई, ऊ, ए के बाद 'इति' लगाया जाता है। जैसे- कन्यसी इति। द्यावापृथिवी इति। इन्द्रवायू इति। तस्तभाने इति।

२ 'उ' निपात को दीर्घ एवं अनुनासिक करके (ऊँ) 'इति' लगाया जाता है। जैसे - उ = ऊँ इति।

३ ओकारान्त निपात के बाद भी 'इति' लगता है। अथो इति। इन्द्रो इति। एवो इति।

४ सप्तम्यन्त पद में प्रयुक्त ई, ऊ के बाद 'इति' लगता है। जैसे सरसी इति। रोदसी इति।

५ अस्मे, युष्मे, त्वे आदि के बाद भी इति लगता है। जैसे अस्मे इति। युष्मे इति।

६ संहितापाठ में सन्धि-नियम के कारण यदि विसर्ग को 'र' न कहा जाता है तो पद पाठ में इसके आगे 'इति' लगाकर विसर्ग को 'रु' कर दिया जाता है। जैसे- अन्तः = अन्तरिति। अवितः = अवितरिति

७ यदि सम्बोधन के अन्त में 'ओ' आये तो इसके बाद 'इति' लगता है। जैसे- विष्णो इति। भानो इति।

11:30 AM

Page

अवग्रह सम्बन्धी नियम :-

1 द्वन्द्व समास तथा नञ् समास को छोड़कर समासयुक्त पदों के बीच में अवग्रह (ऽ) लगता है। जैसे - विश्वऽदेवसे । भूरिऽश्रृङ्गा ऽव ।

2 उपसर्गों के बाद कृदन्त या संज्ञा शब्द हो तो उनके बीच में अवग्रह (ऽ) लगता है। जैसे - प्रऽजा । सुऽशिप्रः । विऽक्रमः ।

3 यदि प्रकृति में कोई विकार न हुआ हो तो प्रत्यय तथा विभक्ति के पूर्व ही अवग्रह (ऽ) लगता है। जैसे - हरिऽभ्याम् । चतुःऽभिः । अप्ऽसु । देवऽत्वम् । तविषऽवांसम् । मरुत्ऽवान् ।

विशेष :- त्यात्र, क्तिन्, ष्यञ्, तु, त्व, तरप्, तमप्, वतुप्, मतुप्, क्वसु, क्यच्, क्यङ्, क्यप्, आदि प्रत्ययों के पूर्व अवग्रह (ऽ) लगता है।

4 यदि उपसर्ग और प्रत्यय दोनों एक साथ हो तो प्रत्यय के पूर्व अवग्रह (ऽ) लगता है। जैसे - आतस्थिऽवांसः ।

5 यदि किसी शब्द के साथ इव लगा हो तो इव के पूर्व अवग्रह (ऽ) लगा जाता है। जैसे प्रवर्धितोऽइव ।